इन्दिरा गान्धी राष्ट्रीय कला केन्द्र, पूर्वक्षेत्रीय केन्द्र, वाराणसी के नये कार्यालय भवन के उद्घाटन के अवसर पर आयोजित 'संगीत सन्ध्या' के कार्यक्रम का संक्षिप्त विवरण

(२७ नवम्बर, २०१४)

इन्दिरा गान्धी राष्ट्रीय कला केन्द्र, पूर्वक्षेत्रीय केन्द्र, वाराणसी के द्वारा २७ नवम्बर, २०१४ को पार्श्वनाथ विद्यापीठ के प्राङ्गण में नये कार्यालय भवन के उद्घाटन अवसर पर बनारस घरान की प्रख्यात गायिका श्रीमती सुचरिता गुप्ता के गायन का आयोजन 'संगीत सन्ध्या' शीर्षक से किया गया।

श्रीमती सुचरिता गुप्ता स्वर्गीय पं० श्री मृणालकान्त दत्त की पुत्री हैं। उनका जन्म असम के प्रख्यात संगीत घराने में हुआ था। उन्होंने संगीत की प्रारम्भिक शिक्षा अपने पिता से ली थी, जो बंगाल स्कूल के जान-माने गायक थे। बाद में उन्होंने बनारस के दो विख्यात कलाकारों से संगीत की शिक्षा प्राप्त की। प्रथम थीं – श्रीमती सरिता देवीजी और बाद में श्रीमती सिद्धेश्वरी देवी जी उनकी गुरु थीं। वह बनारस के गायकी साम्राज्य की राजकुमारी कही जाती थीं।

श्रीमती गुप्ता ने अपनी स्नातक शिक्षा १९८० में पूरी की, तत्पश्चात् उन्होंने संगीत विशारद, संगीत प्रभाकर, संगीत प्रवीण और संगीत भास्कर की उपाधियाँ प्राप्त कीं। सुचरिता जी की आवाज़ में सुर की एक सौम्य, सतत उपस्थिति है जो श्रोताओं वे ऊपर अमिट छाप छोड़ती है। वह एकल गायिका भी हैं। उनकी मोहक आवाज में समा बाँधने का गुण है।

सुचरिता जी संगीत के क्षेत्र में जिस नवप्रवर्तनकारी और परिष्कृत विधा के लिए मुख्य रूप से जानी जाती हैं वे इस प्रकार हैं – ठुमरी, दादरा, टप्पा, होरी, चैती एवं कजरी।

सुचरिता गुप्ता बिना किसी अवरोध के अपना कार्यक्रम रेडियो एवं दूरदर्शन पर भी प्रस्तुत करती रहती हैं और एक महान् कलाकार होने के नाते वे सम्पूर्ण भारतवर्ष में अपने श्रोताओं के बीच में अपनी लय, रागदारी एवं मधुर आवाज़ के लिए जानी जाती हैं जो गुरुपरम्परा और पारंपरिक प्रशिक्षण के साथ-साथ स्वयं भी अर्जित किया है।

एक बहुमुखी कलाकार के रूप में सुचरिता देवी ने विभिन्न संस्थाओं से बहुत से पारितोषिक एवं सम्मान प्राप्त किया है। उनमें स कुछ इस प्रकार हैं – विद्याभूषण, कलासाधिका, यश:कीर्ति और द्रोणाचार्य।

सन् २०१२ में वह 'महिला मण्डल काशी' के द्वारा **वूमेन ऑफ द ईयर** सम्मान से सम्मानित की गयी थीं। वह लगभग सम्पूर्ण भारत के प्रतिष्ठित संगीत कार्यक्रमों में अपनी कला का प्रदर्शन कर चुकी हैं। उनकी प्रशंसा में कोई भी शब्द कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी।

अन्त में इन्दिरा गान्धी राष्ट्रीय कला केन्द्र, पूर्वक्षेत्रीय केन्द्र, पार्श्वनाथ विद्यापीठ परिसर, करौंदी, वाराणसी के नाम से स्थित भवन में नये कार्यालय के उद्घाटन के अवसर पर आयोजित 'संगीत सन्ध्या' समारोह में श्रीमती सुचरिता गुप्ता द्वारा गायी गयी कुछ रचनाओं का विवरण देना समीचीन होगा।

सर्वप्रथम श्रीमती गुप्ता ने संस्कृत भाषा में ठुमरी प्रस्तुत किया जिसकी स्वर लहरों से इन्दिरा गान्धी राष्ट्रीय कला वे न्द्र का नया भवन परिसर गूंज उठा।

१. 'कस्मिन् पथे असि श्याम ---------' संस्कृत में अनूदित ठुमरी के इन शब्दों से श्रोतृमण्डली भावविभार हो उठी। समूचा परिसर संगीतमय-सा दृष्टिगत होने लगा।

२. 'एही ठइयाँ मोतिया हेरइले हो रामा ---------' (चैती)

३. 'कौन गली गयो श्याम --------' पूरब अंग की (ठुमरी)

४. 'आज खेलूंगी श्याम संग होली-----' (होरी)

५. 'अधुना कथम् श्यामं पश्यामि -----' संस्कृत में अनूदित (दादरा) ।

इसके अतिरिक्त बनारस घराने के संगीत की धरोहर से भी कुछ पंक्तियों को सुनाकर श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। जैसे –

६. 'बिंदिया ले गई मछरिया------'

परंपरागत तौर पर शादी के उपरान्त गंगा पूजन का प्रचलन देखा जाता है और इस बोल में यही बात उच्चरित हो रही है कि शादी के उपरान्त वर–वधू गंगापूजन हेतु जाते हैं और वहाँ पर वधू की बिंदिया जल में गिर जाती है और उक्त विरहपूर्ण बोल उसके मुख से प्रस्फुटित होते हैं।

७. 'मोरे मारे नजरिया साँवरिया रे ------' इत्यादि, एवं अन्त में कबीरदास जी का 'निर्गुण' पद सुनाकर उक्त संगीत सन्ध्या समारोह को विराम दिया।

डा० (श्रीमती) रमा दुबे
प्रोजेक्ट एसोसियेट